21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जन जीवन–शैली पर प्रभाव

अल्पना सिंह[1], डॉ. पी.के. शर्मा[2]

[1]शोध छात्रा समाजशास्त्र विभाग, सेठ फूल चन्द बागला पी.जी. कॉलेज, हाथरस,
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (उ.प्र.) भारत

[2]एसोशिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सेठ फूल चन्द बागला पी.जी. कॉलेज, हाथरस,
डॉ. बी. आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा (उ.प्र.) भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में ''21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जन जीवन–शैली पर प्रभाव'' का अध्ययन किया गया। इस शोध कार्य में शोधार्थी ने मैनपुरी शहर के 60 व्यक्तियों को न्यायदर्श के रूप में चुना है। जिसमें से 30 महिला एवं 30 पुरूष को लिया गया। ऑकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में संचार प्रौद्योगिकी एवं भारतीय जन जीवन–शैली से सम्बन्धित स्वनिर्मित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया। किसी भी देश को विकास करने के लिए उसे अपनी सृजनात्मकता को दुनियाँ में फैलाने की आवश्यकता होती है। अपने आविष्कार एवं अपनी संस्कृति को दूसरे देशों तक पहुँचाकर ही वह उनका विकास कर सकता है एवं दुनियाँ में अपनी पहचान बना सकता है। जिसके लिए उसे संचार प्रौद्योगिकी की आवश्यकता होती है। जिन देशों के लोग नई तकनीकों को अपनाकर आगे बढ़ते है वे उन्नति की ओर अग्रसर होते हैं तथा उनकी संस्कृति की पहचान पूरे विश्व में होती है। 21वीं शताब्दी में संचार प्रौद्योगिकी को भारत में सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक विकास एवं राष्ट्रीय प्रगति के लिए आवश्यक माना है। प्रस्तुत शोध कार्य से शोधार्थी को यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि वर्तमान में संचार प्रौद्योगिकी ने भारतीयों की जीवन–शैली में बहुत ही महत्वपूर्ण परिवर्तन किये हैं। जिससे उनकी जीवन–शैली में सुधार के साथ प्रगति भी हुई है। आज भारतीय पूरे विश्व में अपनी सृजनात्मकता के कारण जाने जाते है। उन्होंने अपनी नई सोच से पूरे विश्व में पहचान बना ली है। जो केवल संचार प्रौद्योगिकी के सहयोग से ही सुलभ हुआ है। क्योंकि किसी भी देश का नागरिक जितना उन्नत होता है वह देश भी उतना ही उन्नत होगा। देश से नागरिक और नागरिकों से देश बनता है।

मुख्य बिन्दु **–**संचार प्रौद्योगिकी, जीवन–शैली, जन जीवन, 21वीं शताब्दी, उन्नति।

I प्रस्तावना

आधुनिक परिवेश में भारतीय, जीवन के हर क्षेत्र जैसे – शिक्षा, चिकित्सा, तकनीकी, वित्तीय एवं सैन्य सेवाओं आदि में अपना उत्कृष्ट योगदान देकर देश के विकास में सहायता कर रहें हैं साथ ही साथ पारिवारिक दायित्वों को भी बखूबी निभा रहे हैं। संचार प्रौद्योगिकी को समाज ने सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय प्रगति के लिए एक महत्वपूर्ण प्रेरणास्त्रोत के रूप में स्वीकार किया गया है। संचार प्रौद्योगिकी जितना विशाल और सृजनशील माध्यम है, समाज उसका उतना प्रयोग नहीं करता। संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से आप विश्व के साथ जुड़ सकते हैं। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शामिल कर अपने जीवन को नई दिशा दे सकते है, किन्तु आज भी समाज के कई अंग ऐसे हैं जो इसके लाभों से वांछित हैं, जो उनके विकास में रूकावट है। इसलिए इस विषय पर यह अध्ययन किया गया।

II संचार प्रौद्योगिकी का अर्थ

संचार प्रौद्योगिकी का अर्थ समझने से पहले प्रौद्योगिकी का अर्थ समझना आवश्यक है। इसका कारण यह है कि विज्ञान ने सृजन तथा निर्माण को जितना भी बढ़ावा दिया है वह सब प्रौद्योगिकी के माध्यम से ही सम्भव हुआ है। संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से आप विश्व के साथ जुड़ सकते है। संचार माध्यम लोगों के बीच जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा हैं।

III पूर्व शोध कार्य

सिंह, डॉ0 मनोरमा (2017) ने रीवा जिले में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) समर्थित शिक्षण की प्रभावकारिता का समीक्षात्मक अध्ययन किया जिसके अनुसार ''स्कूलों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई0सी0टी0)'' एक केन्द्र प्रायोजित योजना है जो माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को सूचना व संचार प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के उद्देश्य से दिसम्बर 2004 में शुरू की गई थी। योजना का उद्देश्य सामाजिक–आर्थिक और भौगोलिक कारणों से पिछड़े छात्र–छात्राओं के बीच डिजिटल समस्याओं को कम करना है। इय योजना के अन्तर्गत सुस्थिर कम्प्यूटर प्रयोगशालाओं की स्थापना के लिए राज्यों व संघ शासित प्रदेशों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जानी है। शोध क्षेत्र में 64.26 प्रतिशत शैक्षिक तकनीकी समर्पित शिक्षा में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी समर्थित शिक्षण का सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

सिंह, साधना, अग्रवाल, आशीष एवं मिश्रा, मानवी (2015) ने सूचना प्रौद्योगिकी अतीत, वर्तमान और भविष्य पर शोध कार्य किया। सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) एक ऐसी प्रौद्योगिकी हैं जिसका उद्देश्य कम्प्यूटर द्वारा सूचना को इकट्ठा करना, प्रसंस्करण करना, भण्डारन करना और जानकारी देना है। हम एक लम्बा रास्ता असाधारण समय में तय करके वायरलेस के इतिहास में पहुँच गये है। पिछले युग में वायरलेस प्रौद्योगिकियों में भारी वृद्धि दर्ज की गई है। आईटी का विकास कम्प्यूटर की पीढ़ी पर आधारित है, जोकि पहली पीढ़ी से पाँचवी पीढ़ी तक पहुँच गया है। सूचना प्रौद्योगिक ने एकीकृत उद्देश्य 'प्रदर्शन और

कार्यकुशलता' को पूरा करने के लिए विभिन्न विकासवादी मार्गों का पालन किया है। सूचना प्रौद्योगिकी सूचना के विभिन्न रूप को दर्शाता है जिनका विभिन्न उद्देश्यों जैसे – सम्मेलनों, अनुसंधान और ऑडियों, वीडियों, चैट आदि के लिए होता है। यह आलेख आईटी के अतीत, वर्तमान और भविष्य को परखता है। यह आलेख सूचना प्रौद्योगिकी के अतीत से शुरू होता है। इस आलेख में सूचना प्रौद्योगिकी के विकास और विकास क्रम को दर्शाया गया है। यह सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) से सम्बन्धित है। सूचना प्रौद्योगिकी दुनिया में वर्तमान शताब्दी में अन्य तकनीकों की तुलना में तेजी से बढ़ने वाली प्रौद्योगिकी हैं।

धार, सुहाय, जैन, नमन एवं मंडलोई, धीरज (2015) ने आज के युग में सूचना प्रौद्योगिकी ई–गवर्नेन्स, ई–लर्निंग, ई–कॉमर्स, ई–हेल्थ पर शोध कार्य किया। एक समय था जब आयकर जमा करने के लिए व्यक्ति को लम्बी लाइनों में लगना और अपनी बारी का इंतजार करना पड़ता था। रिश्तेदार को पैसे निकालने के लिए फार्म भरने होते थे। ग्रामीण क्षेत्र के एक व्यक्ति को अच्छा स्वास्थ्य परामर्श प्राप्त करने के लिए शहर जाना पड़ता था। ये सारे कार्य आईटीसी को ले आने से अधिक आसान और अधिक सुविधाजनक बन गये हैं। ''वेस्टर्न यूनियन मनी ट्रांसफर'' जैसे फर्मों ने बहुत हद तक मनी ऑर्डर सेवाओं पर अधिकार कर लिया है। फ्लिपकार्ट डॉट कॉम और जॉबांग कॉम जैसी वेबसाइटें खरीदारी क्रियाओं में क्रान्ति ले आई हैं क्योंकि उन्होंने हमें साइबर मॉल की अवधारणा से परिचित कराया है। इस प्रपत्र का उद्देश्य शासन, स्वास्थ्य देखभाल, वाणिज्य और शिक्षा में सूचना प्रौद्योगिकी के प्रयोग तथा इसमें पेश आ रही चुनौतियों की समीक्षा करना है।

IV अध्ययन के उद्देश्य

(क) 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जीवन–शैली पर प्रभाव का अध्ययन करना।

(ख) 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी से भारतीय जीवन–शैली में सकारात्मकता का अध्ययन करना।

V अध्ययन की परिकल्पनाएं

(क) 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जन जीवन–शैली पर सकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

(ख) 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी से भातीय जीवन–शैली में सकारात्मक रूप में सृजनात्मकता आयी है।

VI शोध प्रविधि

(क) अध्ययन का न्यादर्श

प्रस्तुत शोध कार्य के लिए शोधार्थी ने मैनपुरी शहर के 60 व्यक्तियों को न्यादर्श के रूप में चुना है। जिसमें से 30 शिक्षित महिला एवं 30 पुरूष को लिया गया।

(ख) शोध विधि

प्रस्ततु समस्या **''21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जन जीवन–शैली पर प्रभाव''** के अध्ययन के लिये अनुसंधानकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया। तथ्यों के संकलन हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक विधियों का प्रयोग किया गया है प्राथमिक तथ्यों के संकलन के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया है तथा द्वितीयक तथ्यों के संकलन के लिए पुस्तकों, व पत्र–पत्रिकाओं आदि का प्रयोग किया गया है।

(ग) शाध कार्य के प्रयुक्त चर

(i) **स्वतन्त्र चर –** संचार प्रौद्योगिकी
(ii) **आश्रित चर –** भारतीय जीवन–शैली

(घ) शोध कार्य में प्रयुक्त सांख्यिकी

शोध कार्य में आँकड़ों के संकलन के पश्चात उनका परिणाम निकालने के लिए निम्न सांख्यिकी सूत्रों का प्रयोग किया गया।

(i) आवृत्ति
(ii) प्रतिशत

(च) शोध कार्य में प्रयुक्त उपकरण

आँकड़ों के संकलन के लिए उपकरण के रूप में संचार प्रौद्योगिकी एवं भारतीय जन जीवन–शैली से सम्बन्धित साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया।

सारणी क्रमांक – 1

21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जन जीवन–शैली पर सकारात्मक प्रभाव का अध्ययन

सामाजिक आर्थिक स्तर	संख्या	सकारात्मक प्रभाव		नकारात्मक प्रभाव	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्च	20	15	75	5	25
मध्यम	20	13	65	7	35
निम्न	20	9	45	11	55
कुल	60	37	61.7	23	38.3

सारणी क्रमांक 1 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर कुल 60 व्यक्तियों में से 75 प्रतिशत उच्च स्तर के व्यक्ति 65 प्रतिशत मध्यम स्तर के व्यक्ति तथा 45 प्रतिशत निम्न स्तर के व्यक्तियों का यह मानना है कि 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जन जीवन–शैली पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी प्रकार 25 प्रतिशत उच्च स्तर के व्यक्ति 35 प्रतिशत मध्यम स्तर के व्यक्ति तथा 55 प्रतिशत निम्न स्तर के व्यक्तियों का यह मानना है कि 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जन जीवन–शैली पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जन जीवन–शैली पर सकारात्मक प्रभाव का आरेखीय प्रस्तुतीकरण

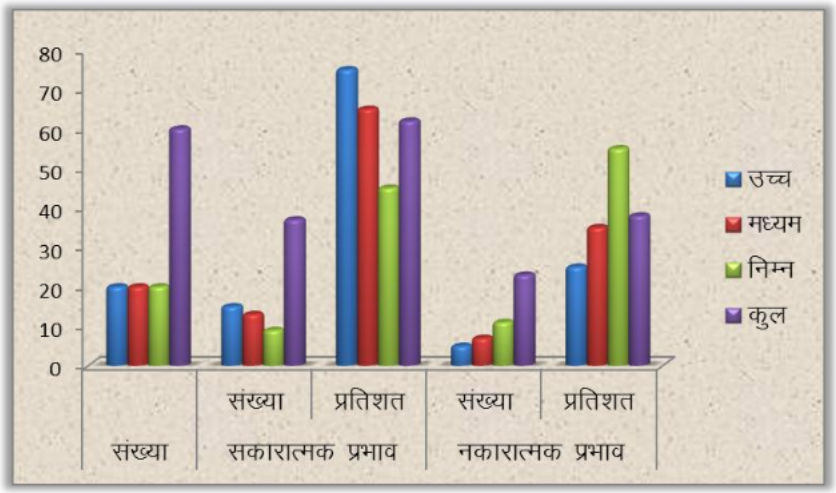

आरेख क्रमांक – 1

(छ) निष्कर्ष

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सर्वाधिक व्यक्तियों का यह कहना है कि 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी का भारतीय जन जीवन–शैली पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सारणी क्रमांक – 2

21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी से भारतीय जीवन–शैली में सृजनात्मकता का अध्ययन

सामाजिक आर्थिक स्तर	संख्या	सृजनात्मकता		असृजनात्मकता	
		आवृत्ति	प्रतिशत	आवृत्ति	प्रतिशत
उच्च	20	16	80	4	20
मध्यम	20	18	90	2	10
निम्न	20	14	70	6	30
कुल	60	48	80	12	20

सारणी क्रमांक – 2 के विश्लेषण से स्पष्ट है कि सामाजिक आर्थिक स्तर के आधार पर कुल 60 व्यक्तियों में से 80 प्रतिशत उच्च स्तर के व्यक्ति 90 प्रतिशत मध्यम स्तर के व्यक्ति तथा 70 प्रतिशत निम्न स्तर के व्यक्तियों का यह मानना है कि 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी से भारतीय जीवन–शैली में सृजनात्मकता आयी है। इसी प्रकार 20 प्रतिशत उच्च स्तर के व्यक्ति 10 प्रतिशत मध्यम स्तर के व्यक्ति तथा 30 प्रतिशत निम्न स्तर के व्यक्तियों का यह मानना है कि 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी से भारतीय जीवन–शैली में सृजनशीलता पर कोई अन्तर नहीं पड़ा है।

आरेख क्रमांक : 2
21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी से भारतीय जीवन–शैली में सृजनात्मकता का अध्ययन

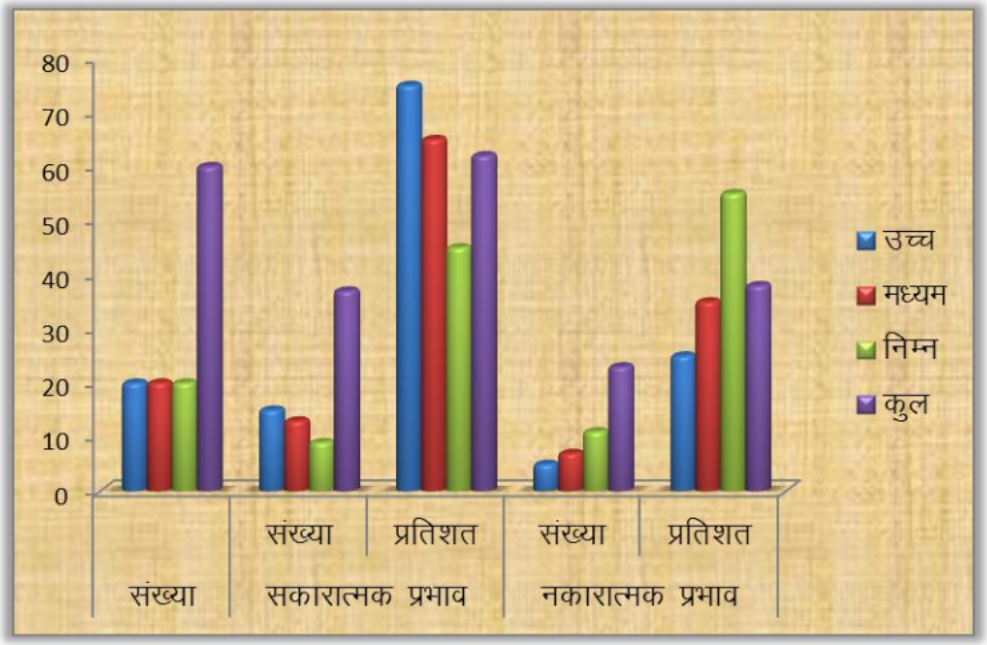

आरेख क्रमांक – 2

VII निष्कर्ष

उपरोक्त गणना के आधार पर यह कहा जा सकता है कि 21वीं शताब्दी की संचार प्रौद्योगिकी से भारतीय जीवन–शैली में सृजनात्मकता आयी है। भारतीय जीवन–शैली और भी सृजनशील हो गई है। इस प्रपत्र में निष्कर्षतः समाज पर वर्ग के आधार पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव को देखा गया है। जिसमें पाया गया कि उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग में सामाजिक, आर्थिक स्तर के आधार पर प्रोद्योगिकी व्यक्तियों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। उपरोक्त तथ्य संकलन के माध्यम से यह पाया है कि मध्यम वर्ग को प्रौद्योगिकी ने सबसे अधिक प्रभावित किया है इसके कई मुख्य कारण हो सकते हैं। आधुनिकीकरण, भूमण्डलीयकरण आदि का सबसे अधिक प्रभाव देखा गया है। इसका एक कारण यह भी है कि यह वर्ग अपने सामाजिक स्तर को उठाने के लिए प्रति पल प्रयासरत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

[1] गुप्ता, एच0पी0 (2005). ''सांख्यिकीय विधि'' शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद।

[2] नरूला, संजय (2007). ''रिसर्च मैथोडोलॉजी'' स्वरूप एण्ड सन्स, नई दिल्ली।

[3] आहूजा, राम (2008). सामाजिक सर्वेक्षण एवं अनुसन्धान, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।

[4] अग्रवाल, अनिल (2005). भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, मंथन प्रकाशन, इलाहाबाद।

[5] सिंह, साधना, अग्रवाल, आशीष एवं मिश्रा, मानवी (2015). सूचना प्रौद्योगिकीः अतीत, वर्तमान और भविष्य, बाइलिंगग्वल इन्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन इन्फारमेशन टेक्नोलॉजी, येस्टर्डे, टूडे एण्ड टूमारो, 19–21 फरवरी 2015, पेज नं0 14–20

[6] धार, सुहास, जैन, नमन एवं मंडलोई, धीरज (2015). आज के युग में सूचना प्रौद्योगिकीः ई–गवर्नेन्स, ई–लर्निंग, ई–कॉमर्स, ई–हेल्थ, बाइलिंगग्वल इन्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन इन्फोरमेशन टैक्नोलॉजी, येस्टर्डे, टूडे एण्ड टमारों, 19–21, फरवरी 2015, पेज नं0 21–25

[7] सिंह, डॉ0 मनोरमा (2017). रीवा जिले में सूचना व संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) समर्थित शिक्षण की प्रभावकारिता का समीक्षात्मक, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवान्स एजूकेशनल रिसर्च, वॉल्यूम 2, इशु 2, पेज नं0 58–61